विचार बिन्दु

जहाँ चक्रवर्ती सम्राट की तलवार कुंठित हो जाती है, वहाँ महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर देता है। –हरिऔध

सचिव, बैद, गुरु तीनि जों, प्रिय बोलहिं भय आस

उपरोक्त दोहा गोस्वामी तुलसीदास जी ने लगभग 450 वर्ष पूर्व लिखा था था किंतु ऐसा लगता है इसका मर्म और अर्थ आज के राजनीतिज्ञ एवं सत्ताधारी भूल गए हैं। इस दोहे का सीधा-साधा अर्थ है कि 'जिस राज में मंत्री, चिकित्सक एवं गुरु भय या स्वार्थ के कारण केवल राजा को प्रिय बात कहें, तो उस राज्य का शीघ्र ही नाश सुनिश्चित है।'

वर्तमान में यदि हम स्थितियों का निष्पक्ष रूप से आकलन करें, तो यह पाएँगे कि आधुनिक राजा (सत्ताधारी) इन तीनों की बातों को नजर अंदाज कर रहे हैं, अथवा क्यों कहें कि यह तीनों ही सरकार की मनपसंद बात करने में लगे हैं तो गलत नहीं होगा।

पहले हम मंत्री अथवा शासन व्यवस्था में लगे व्यक्तियों की बात को ही लें। कुछ वर्षों से शासन तंत्र के अधिकारियों और मंत्रियों में यह साहस नहीं बचा कि वह सत्ता के शीर्ष पर बैठे प्रधानमंत्री के किसी भी निर्णय अथवा किसी भी नीति के प्रति अपनी राय निष्पक्ष रूप से सही रूप में व्यक्त कर सकें। यदि कोई करता भी है तो ऐसा करने वालों को शीघ्र ही अपने पद से अलग कर दिया जाता है। नौकरशाही की हालत यह हो गई है कि वह केवल हां में हां मिलाने के अलावा और कुछ भी बात करने की सोचते तक नहीं। जिस प्रकार की सही और स्पष्ट बात जनता के हित में रखने की अपेक्षा नौकरशाहों से की जाती है, और जिस बात के लिए उन्हें प्रशिक्षण भी दिया जाता है, उसी के आधार पर उसे देश की प्रशासन की स्टील फ्रेम कहा गया था। हो यह रहा है कि डर अथवा स्वयं के क्षुद्र स्वार्थ के कारण उन्होंने सत्ता को सही बात कहना और सही राय देना ही बंद कर दिया। चाटुकारिता में एक दूसरे से आगे बढ़ने की एक प्रकार से होड़ ही लग गई। इसका परिणाम यह हुआ कि किसी भी विषय पर दूसरा पक्ष और विचार आना चाहिए था, उसके प्राप्त होने के सारे रास्ते ही बंद हो गए। निर्णय एकतरफा होने लगे और उनका खामियाजा आज देश की जनता को भुगतना पड़ा है। इस प्रकार के कई निर्णय हैं, जिनमें सबसे पहला महत्वपूर्ण निर्णय वर्तमान सत्ता द्वारा नोटबंदी के संबंध में 2016 में लिया गया था। इसका कोई विरोध तत्कालीन मंत्री अथवा नौकरशाहों ने प्रधानमंत्री के समक्ष नहीं किया। यदि ऐसा किया गया होता, तो संभवतया देशवासी अनावश्यक परेशानी से गुजरने से बच सकते थे। अंग्रेजी में एक कहावत है, More loyal than the king".। आज की नौकरशाही इसी उक्ति को चरितार्थ करने में लगी है। इसके पीछे कारण केवल एक है, स्वयं की दूसरों से पहले पदोन्नति, अच्छे स्थान पर पदस्थापन, ताकि वह सत्ताधारियों के नजदीक आ सकें।

गत कुछ वर्षों में देखा गया है कि नौकरशाही की सही बात कहने की क्षमता ही धीरे-धीरे कुंद होती गई है। और जिस से भी सही बात कहने का साहस किया है उसे कई प्रकार से प्रताडित, परेशान किया गया। फलस्वरूप अन्य लोग भी सत्ता के समक्ष सच बोलने की सोच भी ना सकें। इसका खामियाजा कई राज्य सरकारों को भी भुगतना पड़ा है।

गोस्वामी तुलसीदास ने यह समझ कई वर्षों पहले उत्पन्न करने का प्रयास किया था जब लोकतंत्र का कहीं नामोनिशान नहीं था और केवल राजा महाराजाओं का शासन था। आज, जबकि लोकतंत्र की व्यवस्था में हम जी रहे हैं, उसके उपरांत भी यदि मंत्री, सचिव अथवा पूरा तंत्र प्रधानमंत्री अथवा अन्य नीति निर्धारकों को सही बात कहने से डरते हैं, तो यह मान कर चलना चाहिए कि इसका नुकसान अंततः सत्ताधारी लोगों को ही उठाना पड़ेगा। अच्छे राजनेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वह सही बात कहने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित करें और उन्हें ऐसा करने हेतु उचित वातावरण भी प्रदान करें किंतु ऐसा होता हुआ अधिकांशतः दिखाई नहीं देता है। इसी कारण अनेक निर्णय कई बार जन विरोधी सिद्ध हो रहे हैं। जब अधिकारीगण किसी भी नीति अथवा निर्णय के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को सामने लाएंगे ही नहीं और नीतियां घोषित हो जाएंगी, तो उसका अपेक्षित लाभ नहीं मिलना तो निश्चित ही है। यही हम अधिकांश प्रकरणों में देख भी रहे हैं।

उदाहरण के लिए आजकल हर स्थान पर मोबाइल डाटा के उपयोग में देश की प्रगति को ही देश की खुशहाली का संकेत बताया जा रहा है। प्रश्न यह है कि डाटा का उपयोग तो देश में खूब हो रहा है किंतु उपभोग करने के लिए पर्याप्त मात्रा में आटा उपलब्ध नहीं है। इसी कारण बच्चे दिन भर मोबाइल में लगे रहने से कुपोषित होते जा रहे हैं। पोषण की बड़ी समस्या बनी हुई है। यदि हां में हां मिलाने के स्थान पर बच्चों की पोषण की स्थिति को सुधारने हेतु नौकरशाहों ने कोई ठोस सुझाव देकर के कोई नीति क्रियान्वित कराई होती, तो व स्थिति वह नहीं होती जो आज हुई है।

जनता लोकतंत्र में सर्वोच्च सत्ता रखती है और वह समय आने पर इस प्रकार के अहंकारी स्वभाव का उत्तर देती रही है। यदि हमें राज और धर्म को बचाना है तो सत्ता में बैठे हुए लोगों को विशेष रूप से यह ध्यान देना होगा कि अपने सलाहकारों, मंत्रियों, अधिकारियों को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष राय रखने हेतु छूट दें ताकि सही स्थिति सामने आ सके।

जो तीन कृषि कानून लाए गए थे, वे भी इसी प्रकार से केवल सत्ता में बैठे व्यक्तियों, विशेषकर प्रधानमंत्री को प्रसन्न करने के लिए लाए गए। इसके पीछे, ऐसा सुझाव देने वालों का कोई या लालच या स्वार्थ अवश्य रहा होगा। इसी का परिणाम हुआ कि अंततः तीनों कृषि कानूनों को वापस लेना पड़ा और प्रधानमंत्री को देश वासियों से माफ़ी माँगनी पडी थी।

तुलसीदास जी के दोहे को आगे बढ़ाते हुए हम वर्तमान सन्दर्भ में मीडिया के भूमिका पर भी विचार कर सकते हैं। आज अधिकांश राष्ट्रीय मीडिया, केंद्र की सरकार को एवं सत्ताधारी दल को प्रसन्न रखने के लिए ही अपने सारे कार्यक्रम बनाता है। 24 घंटे उन्हीं विषयों पर चर्चा करता है जो सरकार के हितों की पुष्टि करता हो और सत्ताधारी दल के एजेंडा को आगे बढ़ाए। मीडिया के एक वर्ग को इसीलिए 'गोदी मीडिया' कहा जाने लगा है। वह उसी प्रकार का काम करता है जैसा सत्ताधारी चाहते हैं। मीडिया का काम जहां जनता के प्रतिनिधि के रूप में समस्याओं को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना होता है वहीं यदि वह सरकार की चापलूसी में लग जाए तो जनता की समस्याएं वैसे ही बनी रहती हैं। इस प्रक्रिया में सरकार भी खुशफहमी में रहती है कि सब कुछ बहुत अच्छा है। इसका तात्कालिक लाभ भले ही सत्ताधारी दल को मिले, किंतु वास्तविकता सामने आने से वह वंचित ही रहते हैं। फलस्वरुप, सत्ताधारी दल को चुनाव में भी नुकसान ही होता है।

हाल ही में 'गोदी मीडिया' के एक एंकर सुधीर चौधरी ने केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी से जब टमाटर की अत्यधिक बढ़ती कीमतों से संबंधित प्रश्न पूछा तो वह उत्तर देने के स्थान पर सुधीर चौधरी से उनके जेल से अनुभव के संबंध में प्रति प्रश्न पूछ कर उनके लिए अटपटी स्थिति उत्पन्न कर दी। स्पष्ट है, गोदी मीडिया के किसी प्रतिनिधि ने जब जनता के प्रतिनिधि के रूप में बढ़ती महंगाई के बारे में महिला बाल विकास मंत्री से जवाब चाहा तो यह बर्दाश्त नहीं हुआ। यह अहंकार के ही कारण है कि वह किसी भी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना अपना अपमान समझते हैं और उन्हें पसंद नहीं करते जो उनकी सुविधा के अनुसार उनसे प्रश्न पूछे नहीं पूछे। ऐसा दृष्टिकोण चाहे मीडिया के प्रति हो अथवा सरकार में काम करने वाले अधिकारियों के प्रति, यह प्रवृत्ति किसी भी प्रकार से शासन के लिए लाभकारी नहीं है। जनता के लिए लोकतंत्र में अहंकार का कोई स्थान होना ही नहीं चाहिए, विशेषकर जनता के प्रति।

अब हम गुरु की बात करें, जिसका मुख्य कर्तव्य होता है नए-नए विचारों को विभिन्न दृष्टि से देखकर उन पर शोध करें और शोध के परिणाम से जनता तथा सरकार को अवगत कराए। समाज में गुरु का स्थान प्राप्त जो शोध संस्थान अथवा शिक्षण संस्थान इस काम में निष्पक्ष रूप से लगे हुए हैं और जो लोग इन कामों को करते हैं, वहीं सरकार के कोप का भागीदार बन जाते हैं। हाल ही में अशोका यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर को केवल इसलिए अपना पद छोड़ना पड़ा कि उन्होंने शोध के माध्यम से चुनाव प्रक्रिया की कुछ कमियों को उजागर किया था, जिसके कारण सरकार की स्थिति अटपटी सी बन गई थी। सरकार को यह सहन नहीं हुआ और उसने इन प्रोफेसर के विरुद्ध कार्रवाई की। इसके कारण पूरे शिक्षण जगत में इसका प्रतिवाद हुआ। जिस देश में गुरु भी अपने स्वार्थवश सत्ताधारित व्यक्तियों के गुणगान में ही व्यस्त हो जाएंगे तो वहां अवनति सुनिश्चित है। कुछ कुछ इसी प्रकार के दृश्य आजकल हमें उच्च शिक्षण संस्थानों जैसे आईआईटी, आई आई एम एवं केंद्रीय विश्वविद्यालय में भी देखने को मिल रहे हैं, जहां शोध को भी एक विशेष दिशा में ले जाने वालों को ही प्रश्रय मिलता है। किसी दूसरे दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने पर सरकार की नाराजगी झेलनी होती है। यह स्थिति, स्वस्थ लोकतंत्र की दृष्टि से अच्छी नहीं कहीं जा सकती। जब हम विश्व गुरु बनने का दावा कर रहे हैं तो उसके लिए पहला मापदंड तो यही होगा कि क्या हम अपने देश में अपने गुरु अर्थात विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षक या उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्य वैज्ञानिक एवं शोधकर्ताओं को अपना शोध करने की स्वायत्तता और स्वतंत्रता दे सकते हैं अथवा नहीं। ऐसा कोई भी देश विश्व गुरु नहीं कहला सकता, जहां के लोगों को अपने मत को अभिव्यक्त करने की स्वीकृति न हो एवं वे केवल सत्ताधारी दल की विचारधारा को ही आगे बढ़ाने के काम में लगने हेतु मजबूर हों।

वैसे तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समाज के सभी वर्गों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इसके संरक्षण करने पर जोर सर्वोच्च न्यायालय ने भी कई बार दिया है । दुर्भाग्य से आजकल, सरकार के विरोध को राष्ट्रद्रोह कहा जाने लगा है। जो भी शिक्षक, राज सत्ता में बैठे लोगों के विचारों को पुष्ट करने के काम में तत्पर हों, वे सदैव सत्ता की कृपा के पात्र बन जाते हैं एवं कोई भी अन्य प्रकार के विचार व्यक्त करने वाला हमेशा उनके उपहास का शिकार बनता है । गत कुछ सालों में कलाकारों, लेखकों, शिक्षकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही हुई है, जिससे इन वर्गों के लोगों में केवल जी-हजूरी करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। शिक्षकों को बाध्य कर अपनी बात प्रचारित-प्रसारित करवाना, अहंकार का ही परिचायक है। जब प्रधानमंत्री स्वयं किसी भी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना उचित नहीं मानें तो अन्य उनके मंत्रियों में इसी प्रकार का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

जनता लोकतंत्र में सर्वोच्च सत्ता रखती है और वह समय आने पर इस प्रकार के अहंकारी स्वभाव का उत्तर देती रही है। यदि हमें राज और धर्म को बचाना है तो सत्ता में बैठे हुए लोगों को विशेष रूप से यह ध्यान देना होगा कि अपने सलाहकारों, मंत्रियों, अधिकारियों को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष राय रखने हेतु छूट दें ताकि सही स्थिति सामने आ सके। केवल हां में हां मिलाने वाले अधिकारी या मंत्री कभी भी राजा अथवा शासन में बैठे लोगों के लिए वास्तविक हित साधक नहीं बन सकते हैं। हम केवल आशा ही कर सकते हैं कि धर्म को आगे रखने वाली वर्तमान सरकार गोस्वामी तुलसीदास की उक्त पंक्तियां के भावार्थ एवं मर्म को समझते हुए उसके अनुसार अपने व्यवहार में संशोधन करेंगे। इससे उनकी सत्ता बनेगी रहेगी और जनता का हित भी सधेगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

तीन माह में ही सड़क टूटी, ठेकेदार ने पैचवर्क कर लाखों का बिल उठाया

सड़क निर्माण में किसी भी जगह गुणवत्तायुक्त कार्य नहीं किया गया

भीण्डर, (निसं)। वल्लभनगर विधानसभा के निमड़ी-हमेरपुरा में बनी नई सड़क तीन माह में टूट गई तो ठेकेदार ने आनन-फानन में सड़क पर पडे गड्डों का पेचवर्क करके पीडब्ल्यूडी विभाग से लाखों का बिल पास करवा दिया। जबकि सड़क निर्माण में किसी भी जगह गुणवत्तायुक्त कार्य नहीं किया गया है।

इसको लेकर ग्रामीणों ने विभाग सहित जनप्रतिनिधियों से सड़क पर पुनः डामरीकरण की मांग रखी, लेकिन पेचवर्क के अलावा ठेकेदार पर कोई कार्यवाही नहीं की गई।

निमडी-हमेरपुरा डामरीकृत सड़क के लिए राज्य सरकार ने एक करोड 20 लाख 84 हजार रूपये स्वीकृत किये थे। जिसके तहत पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा टेंडर प्रक्रिया करके संबंधित फर्म को कार्य आदेश जारी किये थे। विभाग के ठेकेदार ने घटिया सामग्री का उपयोग करके सड़क का निर्माण किया, जिससे तीन माह में ही रोड टूटने लगी। वहीं कई स्थानों पर डामर के नीचे समतलीकरण कार्य सही नहीं होने से गड्डे हो गये हैं।

भीण्डर के निकट निमडी-हमेरपुरा रोड पर ठेकेदार द्वारा किया गया पेचवर्क।

- वल्लभनगर विधानसभा के निमड़ी-हमेरपुरा गांव की सड़क का मामला

इसको लेकर विभाग को शिकायत करने पर ठेकेदार ने गड्डों को पेचवर्क से भर दिया, लेकिन पूरी सड़क को दूरस्त नहीं किया। इस पर ग्रामीणों ने कि लाखों की सड़क पर भ्रष्टाचार होने का आरोप लगाते हुए सड़क पर सही समतलीकरण करके पुनः डामर करने की मांग रखी है। वहीं सड़क दूरस्त नहीं होने पर नेताओं को गांव में नहीं आने की चेतावनी भी दी।

उदयपुर में 24 घंटे में 44 एम. एम. बारिश, फतहसागर के चार गेट खोले

फतहसागर के गेट खुलने की खबर लगते ही बड़ी संख्या में शहरवासी उमड़े

उदयपुर,(कासं)। झीलों के शहर में बारिश का चक्र एक बार फिर सक्रिय होने से उमस से राहत मिली है। रविवार को हुई बारिश के बाद सोमवार सुबह बारिश का दौर चला। प्रातः आठ बजे समाप्त बीते 24 घंटों में उदयपुर शहर में 44 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई वहीं जलाशयों में एक बार फिर आवक होने से फतहसागर के चारों गेट दो-दो इंच खोल दिए गए है।

- स्वरूपसागर के दो गेट दो-दो इंच तक खोलकर 80 क्यूसेक पानी का डिस्चार्ज किया जा रहा है
- लेकसिटी में दिनभर बादल छाए रहे। अलसुबह बारिश हुई वहीं दिनभर बूंदाबांदी का दौर चलता रहा

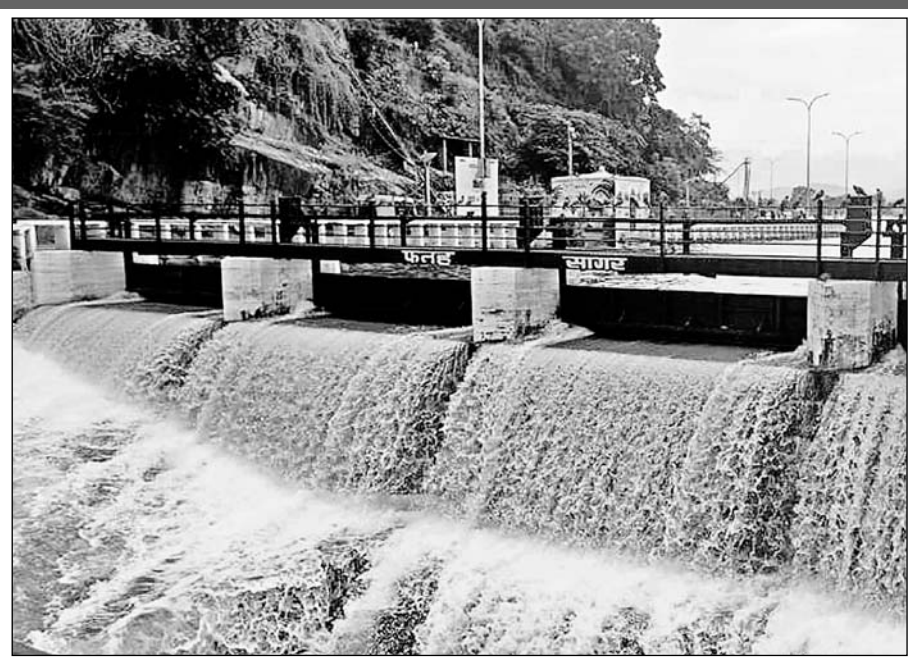

फतहसागर के गेट खोलने से बहता पानी।

लेकसिटी में दिनभर बादल छाए रहे। अलसुबह मूसलाधार बारिश हुई वहीं दिनभर रूक-रूककर हल्की बूंदाबांदी का दौर चलता रहा। बारिश सक्रिय होने से ही ऐतिहासिक फतहसागर झील छलक गई है। फतहसागर झील एक बार फिर ओवरफ्लो हो गई है। मानसून के दोबारा सक्रिय होने से झील में पानी की आवक बढ़ने पर सोमवार दोपहर झील के 4 गेट 2-2 इंच तक खोले गए हैं। जल संसाधन विभाग के अधिशासी अभियंता अनिल कुमार ने बताया कि पिछले दो दिन से अंचल में बारिश का दौर चल रहा है। इससे झीलों में पानी की आवक बढ़ी है। सोमवार को स्वरूपसागर के दो गेट दो-दो इंच तक खोलकर 80 क्यूसेक पानी का डिस्चार्ज किया जा रहा है।

वहीं बेस्टवियर पर भी दो इंच की चादर चल रही है। इससे 50 क्यूसेक पानी की निकासी हो रही है। फतहसागर झील के भी चार गेट सोमवार दोपहर में दो-दो इंच तक खोले गए हैं तथा इससे 95 क्यूसेक पानी की निकासी हो रही है। इधर, फतहसागर के गेट खुलने की सूचना पर बड़ी संख्या में शहरवासी मौके पर पहुंचे तथा गेट से छलकती जलराशि को देखकर रोमांचित हुए।

जोधपुर डिस्कॉम मुख्यालय पर किसानों का पड़ाव जारी

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर डिस्कॉम मुख्यालय के बाहर बिजली समस्या को लेकर आंदोलन कर रहे किसानों ने सोमवार को कार्यालय का घेराव कर दिया। बिजली समस्याओं को लेकर किसान पिछले चार दिन से जोधपुर डिस्कॉम मुख्यालय के बाहर पड़ाव डाले हुए हैं। सोमवार को उन्होंने आंदोलन तेज करते हुए डिस्कॉम मुख्यालय का घेराव कर दिया। काफी देर तक उग्र नारेबाजी हुई। इसके बाद पुलिस ने मामला शांत किया। भारतीय किसान संघ के बैनर तले किस पिछले चार दिन से बिजली समस्याओं को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। तीन रात से वे डिस्कॉम कार्यालय के बाहर सड़क पर ही सो रहे हैं। बीती रात को भी तेज बारिश के बावजूद उन्होंने अपना धरना नहीं छोड़ा। सोमवार सुबह आंदोलन कर रहे किसानों पर हो गए और नारेबाजी करते हुए डिस्कॉम मुख्यालय का गेट बंद करवा दिया। किसी को भी कार्यालय के अंदर जाने से रोक दिया। बाद में पुलिस ने सुरक्षा घेरा बनाया और मामला शांत कराया। कृषि सिंचाई की विद्युत आपूर्ति में वॉल्टेज की कमी व ट्रिपिंग की समस्या दूर करने, जले हुए ट्रांसफार्मर को जल्दी बदलने और मांग पत्र जमा करवाने के बावजूद कृषि कनेक्शन नहीं देने जैसे अन्य मुद्दों को लेकर किसान आंदोलन कर रहे हैं। शनिवार को डिस्कॉम अधिकारियों और किसानों के बीच वार्ता हुई थी। दो बार वार्ताओं का दौर चला लेकिन समाधान नहीं हो पाया।

अघोषित विद्युत कटौती से कई गांवों के लोग परेशान

उनियारा/चौरु, (निसं)। विद्युत विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कथित अनदेखी एवं उदासीनता के चलते हुए करीब एक सप्ताह से क्षेत्र में अघोषित विद्युत कटौती की जा रही है। इससे आमजन का जीवन दुश्वार हो गया है। जानकारी के अनुसार रात्रि के समय दो-दो तीन-तीन घंटे तक आघोषित विद्युत कटौती की जा रहे है।

इससे महिलाओं एवं बच्चों को इस गर्मी एवं उमस के मौसम में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अघोषित विद्युत कटौती के चलते छात्रों का भविष्य अंधकारमय बना हुआ है, छात्र अपना अध्यापन कार्य भी समय पर नहीं कर पा रहे हैं एवं कस्बे की पेयजल व्यवस्था भी चरमरा गई है।

विद्युत विभाग के अधिकारियों से अघोषित विद्युत कटौती के संबंध में जब जानकारी ली जाती है तो विभाग के अधिकारी अघोषित विद्युत कटौती का संतोषजनक जवाब देने के बजाय फोन उठाना भी उचित नहीं समझते हैं। इससे आम उपभोक्ताओं को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। क्षेत्र के चौरू, पचाला, लसाडिया, अमिनपुरा, बराना, बेगमपुरा, सहित एक दर्जन से अधिक गांवों में एक सप्ताह से दिन रात्रि में दर्जनों बार अघोषित विद्युत कटौती की जा रही है।

गंगनहर में सिंचाई के लिए पानी की मांग, ट्रैक्टर रैली निकाली

श्रीगंगानगर, (निसं)। गंगनहर में सिंचाई पानी की मांग के संबंध में सोमवार को संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले किसानों ने कलेक्ट्रेट घेर लिया। किसानों ने नई धानमंडी से कलेक्ट्रेट तक ट्रैक्टर रैली निकाली।

किसान नेताओं का कहना था कि नहरों में अघोषित बंदी से किसान परेशान है। उसकी फसलें बर्बाद हो रही है वहीं पीने के पानी का भी कई ग्रामीणों इलाकों में संकट हो रहा है। ऐसे में पंजाब सरकार को चाहिए कि वह किसान हित में गंगनहर में पानी छोड़े। ऐसा नहीं करने पर किसानों में आक्रोश बढ़ेगा।

किसान सुबह नई धान मंडी में एकत्र हुए। यहां से ट्रैक्टर रैली के रूप में शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए ये लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां हुई सभा में किसान नेता गुरबलपालसिंह संधू ने कहा कि सरकार उनकी मांग नहीं मान रही है। ऐसे में संघर्ष ही एकमात्र रास्ता है। किसानों ने रोष जताने के लिए महाराजा गंगासिंह चौक पर पर मटके फोड़े। उनका कहना था कि अब तो गांवों में पीने के पानी का भी संकट होने लगा है। ऐसे में पंजाब का अड़ियलरवैया समझ से बाहर है। संधू ने कहा कि मांग के संबंध में अब कलेक्ट्रेट पर क्रमिक अनशन शुरू किया गया है। इसके बावजूद उनकी मांग पर ध्यान नहीं दिया जाता तो किसान आंदोलन तेज करेंगे।

- संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले किसानों ने पानी की मांग पर फोड़े मटके

इस बीच ग्रामीण किसान मजदूर समिति से जुड़े किसान राजस्थान-पंजाब सीमा पर डटे हुए हैं। इन किसानों ने राजस्थान से पंजाब और पंजाब से राजस्थान को आने वाले वाहनों का रास्ता रोक रखा है। इन लोगों का कहना है कि जब तक उनकी मांगों पर कार्रवाई नहीं हो जाती वे हाइवे नहीं छोड़ेंगे।

राशिफल मंगलवार 22 अगस्त, 2023

पंडित अनिल शर्मा

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, चित्रा नक्षत्र प्रातः 6:32 तक, शुक्ल योग रात्रि10:17 तक, कौलव करण दिन 2:33 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग प्रातः 8:04 तक है। आज कल्की जयंती, श्रीयाल छठ, वर्ण षष्ठी, मंगला गौरी पूजा है। आज से कल्याण धनी डिग्गीपुरी पद यात्रा आरम्भ होगी।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:17 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:06 तक, शुभ 3:42 से 5:15 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:05, सूर्यास्त 6:54

मेष
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बनेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। बाहर जाना पड़ सकता है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।